

क्रोध से बड़ा है प्यार

तुमसे गुस्सा करनेवाले को प्रत्युपकार के रूप में तुम भी क्यों गुस्सा दिखाते हो? उसके बदले तुम मौन को, स्नेह को, मीठे वचनों को दे सकते हो। इन सबसे श्रेष्ठ प्रतिक्रिया उन लोगों की भलाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना। चंदन को वितरित करनेवाले का हाथ महक उठेगा। उसको स्वीकार करनेवाले का हाथ भी महकने लगता है।

ईश्वर द्वारा पुरस्कार

किसी भी वातावरण में, किसी भी समय ईश्वर का स्मरण करनेवाले लोग इस जीवन और भविष्य दोनों में सफल होंगे।

ईश्वर जिन पर ज्यादा कृपा करते हैं उनकी परीक्षा लेने के लिए ज्यादा कष्ट भी देते हैं, पर अंत में पुरस्कार के रूप में उनका जीवल सफल कर देते हैं।

भगवत् प्राप्ति कृपा और मोक्ष प्राप्ति

हिन्दू धर्म पारिवारिक जीवन बिताते हुए ज्ञान प्राप्त करने को इच्छुक लोगों का समर्थन करता है। शिक्षा में प्रगति, उद्योग में वृद्धि, सांसारिक जीवन में उन्नति पाने के लिए मन ही मन ईश्वर का स्मरण के साथ उनकी पूजा करनी चाहिए। वे धन भी कमाएँगे और ईश्वर की कृपा भी अर्जित करेंगे।

छः वेला की पूजा से सफल व्यक्ति बनना

मनसिक पूजा की रीति : अपने मनपसंद मंदिर को बार-बार स्मरण में लाकर, मंदिर में पुजारी जैसे आप भी मंत्र बोलकर, ईश्वर के चरणों पर फूल चढ़ाकर उनकी प्रदक्षिणा करके प्रणाम करें। इस प्रकार करने पर आपकी समस्याएँ दूर हो जाएँगी। उद्योग में तरक्की मिलेगी। आत्मा का उद्धार होगा।

छः वेला की पूजा करने के समय

प्रातःकाल 5 बजे, सुबह 6 बजे, दुपहर 12 बजे, सायं 5 बजे, रात को 8 बजे, रात को सोने के पहले पूजा करनी चाहिए।

सामूहिक प्रार्थना-भजन कीर्तन

जब लोग साथ-साथ रहते हैं करोड़ों भलाईयाँ होती हैं। अपने जीवन में सब सुविधाएँ मिलने के लिए हमारे द्वारा सामूहिक प्रार्थना का आयोजन होना चाहिए। प्रार्थना के प्रारंभ में कोई एक मंत्र बोले और बाकी लोग उसका अनुकरण जोर से करें।

सामूहिक प्रार्थना का अर्थ यह है कि हम सब लोग एक ही लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारे दिल के मंदिर में विराजमान ईश्वर के सान्निध्य में मंत्र बोलकर विनयपूर्वक प्रार्थना प्रस्तुत करें। तब इस एकतापूर्ण और खुले दिल की प्रार्थना को तत्क्षण ईश्वरव सुन लेते हैं। प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना का आयोजन होने पर सामाजिक कष्ट दूर होंगे। बुरी आदतों से छुटकारा मिलेगा। स्वास्थ्य लाभ होगा। गरीबी मिटेगी। सभी तरह की संपत्ति उपलब्ध होगी।

हिन्दू धर्म के विभिन्न विचारों के दो संग्रह
प्रकाशित हैं प्रत्येक का मूल्य ₹ 10/-

हिन्दू युवक आध्यात्मिक सेवा संघ

HINDU YOUTH SPIRITUAL SEVA SANGAM

तथा


हिन्दू समग्र उन्नति अभियान

HINDU UNITED PROGRESSIVE MOVEMENT

Dhuraimurugar Shiva Meditation Complex,
Palani-Dindigul Main Road, Kanakkanpatti Post,
PALANI, DINDIGUL Dist. - 624 613, TAMILNADU.

ईश्वर की निरंतर सेवा में

इस पत्र को हाथों हाथ बाँटते हुए औरों की भलाई के लिए इसे प्रकाशित करने में सहायता प्रदान करें।



Regd : 185/4-2012 www.hinduupm.co.in

ॐ नमः शिवाय

हिन्दु धर्म मधुरतम धर्म है

यही हमारी विजय की कुंजी है

ईश्वर का कृपापात्र बनने के लिए आवश्यक गुण

1. ईश्वर पर मन को स्थिर रखना
2. मंत्र का जाप करते हुए ध्यान में लीन होना
3. उनके शरण में जाना

भगवद्गीतानुसार पुण्य कर्म

1. पूजा 2. दान 3. तप - ये तीन पुण्य कर्म
मानव जीवन को पवित्र बना देते हैं।
जीवन में सफलता पाने के लिए मनपसंद मंदिर का ध्यान करते हुए
निम्नलिखित मूलमंत्र का जाप करना चाहिए।
ॐ नमशिवाय नमो नमः
ॐ सच्चिदानंदाय नमो नमः
ॐ सत्गुरुनाथ नमो नमः
अथवा
ॐ नमो नारायणाय नमो नमः

www.templedivinesuccess.com www.hinduupm.co.in

ईश्वर-सेवा के इच्छुक संपर्क करें 9750682449

हिन्दू धर्म की विशेषता

हिन्दू धर्म 'सनातन धर्म' नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ अविनाशी धर्म है। इसके अतिरिक्त हिन्दू धर्म के कई अन्य नाम भी हैं। जैसे, सन्मार्ग, तपस्या मार्ग, सत्यधर्म, कृपा धर्म, श्री धर्म आदि।

अहंकार, काम भवना, लोभ, संघन आदि को दूर करके, सुख-दुख भेदभाव को मिटाकर, आत्मज्ञान में लीन होकर आत्मा के असली स्वरूप से परिचित होकर – इस तरह जीवन में मोक्ष प्राप्त करने के लिए हिन्दू धर्म मार्गदर्शन करता है।

हिन्दू धर्म द्वारा तीन उपासना पद्धतियाँ

1. सगुण निराकार – मूर्ति उपासना
2. निर्गुण निराकार – एकत्व की उपासना (सर्वत्र और सभी में ईश्वर के दर्शन)
3. सगुण साकार – अवतारी पुरुषों की उपासना

शैव और वैष्णव धर्म

शिव जी के बाएँ पार्श्व में महाविष्णु स्थित हैं, ऐसा 'तेवारम्' में उल्लेख है। प्रबंधम के अनुसार महाविष्णु के दाएँ पार्श्व में शिव जी विराजमान हैं।

पंचेन्द्रियों के द्वारा जो सुख मिलता है वह आगे चलकर समस्याओं, बीमारियों, दवाओं के रूप में हमें छिन्न-भिन्न कर देता है। इसलिए इंद्रिय सुख के द्वार बंद करके हृदय में ईश्वर के दर्शन प्राप्त करने की आदत डालना हमारा कर्तव्य है। तब हमें शांति मिलेगी, आनंद मिलेगा। इसी को शैव और वैष्णव धर्म हमें सिखाते हैं।

**मृत आत्माओं की शांति व सफलता के लिए
मंत्र का जाप करके प्रार्थना कीजिए**

हिन्दू धर्म द्वारा प्रतिपादित पवित्र भक्ति

1. जीवराशियों के प्रति अनुकंपा
2. करुणा
3. दूसरों की भलाई में दिलचस्पी
4. दूसरों की सेवा में अपने को समर्पित करना
5. निरंतर ध्यान (ईश्वर स्मरण)
6. संसार के कल्याण के लिए ईश्वर से विनती
7. सभी जीवराशियों के सुखमय जीवन के लिए प्रार्थना उपर्युक्त हिदायतों को पालन करनेवाला ही सच्चा ध्यान करनेवाला, सच्चा तपस्वी और उत्तम मनुष्य है।

हिन्दू धर्म द्वारा प्रतिपादित मार्गदर्शन

1. सदाचार
2. भला काम
3. प्राणायाम
4. इन्द्रियनिग्रह
5. निरंतर ईश्वर स्मरण
6. ईश्वर के साथ परमैक्य
7. भगवान के पास आसन
8. मानसिक संतुलन

इन सबको प्राप्त करके आत्मा की प्रगति के लिए हमारा हिन्दू धर्म पथ प्रदर्शन करता है।

हमारा हिन्दू धर्म दीप-स्तंभ की भाँति उन्नत रहकर जनता को जीवन-सागर पार करने के लिए मार्ग दिखाता है।

हिन्दू धर्म में वेद, आगम, इतिहास, पुराण, शास्त्र आदि अपूर्व ग्रंथ रत्न मिलते हैं।

वेद का अर्थ है विद्या-ग्रन्थ। उसमें ईश्वर से संबंधित पुनीत विचार संगृहीत हैं। इसलिए इसे गुप्त ज्ञान कहते हैं। इसके श्लोकों के वास्तविक अर्थ को परम्परा से ज्ञान प्राप्त गुरुओं की सहायता से समझना चाहिए। तभी तो इसका नाम 'श्रुति' बन गया है।

**विवाह के शुभ अवसर पर मूल मंत्र बोलकर बधाई दें।
इससे वर-वधु को वैवाहिक जीवन में सफलता मिलेगी
तथा आपको भी पुण्य मिलेगा।**

वेद का यह भी मतलब है कि उसके अध्येताओं को शिव रूप देने का प्रयास है।

उपनिषद् का अर्थ है ज्ञानगुरु के निकट बैठकर उनके श्रीमुँह से प्राप्त होनेवाला ज्ञान।

हिन्दू धर्मावलंबियों के कर्तव्य

1. प्रतिदिन प्रातःकाल मंत्र का जाप करके, फिर ध्यान का अभ्यास करके उस दिन के कार्यक्रम की योजना बनाना।
 2. योगाभ्यास करना।
 3. कम तीखा, कम खट्टा, कम तेलवाले सात्विक भोजन लेना चाहिए। भोजन कम मात्रा में ही लेना चाहिए। भोजन को बर्बाद नहीं करना चाहिए।
 4. आराम के समय पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन आध्यात्मिक प्रवचन सुनना।
 5. अक्सर मंत्र का जाप करके ईश्वर का स्मरण करना।
 6. अपनी गलतियाँ पहचानकर, ईश्वर से क्षमा-याचना करके आत्मोन्नति को प्राप्त होना।
 7. धर्म की सेवा में अपने को शामिल करके पुण्य-संग्रह करना।
- इन सबका अनुकरण करने पर सांसारिक जीवन सफल बनेगा। इस जीवन को पार करने का दृश्य भी स्पष्ट हो जाएगा।

माता-पिता के कर्तव्य

प्रातः काल उठते ही हाथ-मुँह धोकर, सचेत होकर, मन ही मन मंदिर का स्मरण कर, ईश्वर के चरणों पर फूल चढ़ाकर, मंत्र बोलें। ऐसा करने पर समस्याएँ सुलझ जाएँगी, उद्योग की उन्नति होगी, आत्मिक सफलता मिलेगी। बच्चों को भी ऐसी मानसिक प्रार्थना में प्रशिक्षण दें उनका भविष्य उज्ज्वल बनेगा। वे धन और ज्ञान दोनों से सुसज्जित होंगे।

**भोजन लेने के दो घंटे बाद लेटें
ते पेट संबंधी बीमारियाँ नहीं होगी।**